धर्मवीर भारती के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना

अरुणा गुप्ता
शोध छात्रा, हिन्दी विभाग
म. गाँ. चि. ग्रा. विश्वविद्यालय, चित्रकूट सतना (म.प्र.)

आधुनिक युग के प्रतिभा सम्पन्न कवि, विचारक, कथाकार और गद्यकार के रूप में विख्यात धर्मवीर भारती जो रुमानी साहित्यकार माने जाते हैं, इसके साथ ही वह अपने राष्ट्र के लिए मध्यमवर्गीय, निम्नवर्गीय मनुष्य के विद्रोही कवि के रूप में भी जाने जाते हैं। भारत एक लम्बे अन्तराल तक विदेशियों की परतन्त्रता में रहा, इसके पश्चात् भारतीय स्वतन्त्रता के जितने भी आन्दोलन किये गये उनका बड़ा गहरा प्रभाव जनमानस पर पड़ा। भारती का जन्म भी इसी परतन्त्र भारत में हुआ था, जब विभिन्न राजनैतिक आन्दोलनों एवं विचार धाराओं के संघर्ष उनके सामने आते गये। उस समय भारत भीषण अकाल, कठोर अनुशासन, पुलिस के अत्याचार तथा सरकारी कारों से त्रस्त जनता विद्रोह की आग में सुलग रही थी। धीरे–धीरे असंतोष जनआन्दोलन का रूप ले रही थी। पूँजीवाद भी हावी था, जिसमें आपसी असंतोष भी बढ़ रहा था। जिसे भारती ने "मानव मूल्य और साहित्य" में कहा है–"पूँजीवाद ने मानवीय सम्बन्धों का आधार पारस्परिक प्रेम और सहयोग नहीं रहने दिया।" भारती का बचपन इन्हीं सब स्थितियों में बीच गुजरा जिस कारण से उनके अर्न्तमन में भारी विद्रोह की ज्वाला धधकने लगी वह भी अपने देश के लिए कुछ करना चाहते थे, इसलिए उन्होंने "1942 के भारत छोड़ों आन्दोलन" में सहभागिता की जिससे उनके अध्यन चक्र रुका। जिसे डॉ. पुष्पा वास्कर ने लिखा है–"इस आन्दोलन में सहभागी होने के कारण सन् 1942 में इण्टर की परीक्षा उत्तीर्ण कर लेने के बाद भारती का अध्ययन एक वर्ष के लिए खंडित हो गया।

Access this article online

Quick Response Code:

www.oijms.org.in

देश भक्ति का उन पर बचपन से ही जुनून था जब वह अपने आस–पास गरीबी, कुण्ठा, संत्रास बदलते नैतिक मूल्य, व्यक्ति के जीवन की विषम स्थितियाँ आदि देखते थे तो इनका मन विचलित हो उठता था भारत के प्रति इनमें इतनी भक्ति भावना थी, कि इन्होंने अपने नाम के आगे ही भारती लगा लिया जैसा कि पुष्पा वास्कर लिखती है–"भारती" से पहले वह धर्मवीर वर्मा था। "बच्चन" बचपन में पुकारने का नाम था। हाईस्कूल के दिनों में बच्चन ने अपने नाम के आगे वर्मा के बदले "भारतीय" लगाना प्रारम्भ कर दिया। राष्ट्रीय आन्दोलनों के उस दौर में यह धर्मवीर की राष्ट्रीय भावना का ही द्योतक था। आगे चलकर यही "भारतीय" "भारती" में रूपान्तरित हो गया।" इस विद्रोह को वह अपने बचपन में घर–परिवार के बीच भी देखते थे जब उनके पिता ओवरसियरी की नौकरी करके घर छोड़ दिया और बाद में बँटवारे में मिला सामान भी वापस कर दिया तो भारती के मन पर इस घटना का बहुत गहरा संस्कार हुआ जब पिता जी ने कहा वह अपने परिश्रम से नमक रोटी कमाकर खुश रहेंगे। माँ भी सच्ची आर्य समाजी थी यह तो उनके नाम "धर्मवीर" से ही सिद्ध होता है। लेकिन आर्य समाज ने वैचारिकता पर जितना बल दिया है उतना हार्दिकता पर नहीं। भारती भावुक हृदय थे। अतः आर्य समाज के वैचारिक कठोर अनुशासन मात्र से तृप्ति नहीं मिल सकी।

भारती के किशोरावस्था में ही दूसरा महायुद्ध हुआ जिसे आगे चलकर उन्हें "अंधायुग" को लिखने की प्रेरणा मिली, जिसमें एक जगह पर वह कहते हैं–

"केवल कर्म सत्य है

मानव जो करता है, इसी समय

उसी में निहित है भविष्य

युग–युग तक था।

इसीलिए उसने कहा, अर्जुन

उठो शस्त्र/विगतज्वर युद्ध करो/निष्क्रियता नहीं/

आचरण में ही मानव अस्तित्व की सार्थकता है।''

सन् 1942 का घाव अभी ताजा था जब बंगाल का अकाल पड़ गया, जिसे उन्होंने प्रभावित होकर अपने मन के क्षोभ को अपने कहानी संकलन ''मुर्दों का गाँव'' नामक लिखकर प्रकाशित करवाई। ''मुर्दों का गाँव'' में वह एक जगह वहाँ की भयावहता का वर्णन करते हुए कहते हैं–''मील भर पहले ही, खेतों में लाशे मिलने लगीं। गाँव के नजदीक पहुँचते–पहुँचते तो यह हाल हो गया कि मालूम पड़ता था भूख ने इस गाँव के चारों ओर मौत के बीज बोये थे और आज सड़ी लाशों की फसल लहलहा रही है। कुत्ते, गिद्ध, सियार और कौवे उस फसल का पूरा फायदा उठा रहे थे।'' किशोरावस्था से ही उनमें सुभाष चन्द्र बोस से अत्यधिक प्रभावित थे। जब साम्यवादियों ने महायुद्ध को लोकयुद्ध मानकर मित्र राष्ट्र इंग्लैण्ड का विरोध करने वाले सुभाष को तोजो का कुत्ता कहना प्रारम्भ किया, तो भारती के मन में उसके विरुद्ध तीव्र प्रतिक्रिया हुई। घर की परिस्थितियों के आगे वह कोई राजनेता तो नहीं बने लेकिन अपनी लेखनी के माध्यम से वह अपने राष्ट्रप्रेम को जीवन्त बनाये रखे। इस सम्बंध में डॉ. चन्द्रभानु सोनवणे लिखते हैं–''धर्मवीर भारती में राष्ट्रीयता की भावना प्रारम्भ से प्रखर रही है।'' भारती जी ने अपने साहित्य में उस समय की धार्मिक एवं सामाजिक सुधारवादी आन्दोलनों, कलानुसार राष्ट्रीयता, देश की एकता, नीवन नैतिकता, स्त्री–शिक्षा, आर्थिक चेतना, भाषोन्नति और मानव सापेक्ष्य नींव पर आधारित आत्मिक उत्थान की चेष्टा के फलस्वरूप चतुर्दिक अपनी लेखनी को विस्तार दिया। भ्रष्ट लोक–परम्पराओं के स्थान पर स्वस्थ परम्पराओं को स्थापित किया अपनी रचनाओं में। इनका ध्यान एक ओर पिछली अराजकता, धार्मिक एवं सामाजिक ह्रास, विदेशियों द्वारा सब प्रकार के शोषण पर गया तो दूसरी ओर अपने महान गौरवपूर्ण देश के प्राचीन संस्कृति पर तथा नवीन आयामों पर गया जिसे समय–समय पर वह अपनी रचनाओं पर उतारते गये। वह ''सूरज का सातवाँ घोड़ा'' के निवेदन पर लिखते हैं–''धीरे–धीरे अपने दृष्टिकोण में अधिकाधिक सामाजिकता विकसित करने की ओर मैं ईमानदारी से उन्मुख रहा हूँ और रहूँगा और उसी दृष्टि से जहाँ मुझे मार्क्सवादी शब्दजाल के पीछे भी असन्तोष, अहंवाद और गुटबन्दी दीख पड़ी है उसकी ओर साहस से स्पष्ट निर्देश करना मैं अनिवार्य समझता हूँ, क्योंकि ये तत्व हमारे जीवन और हमारी संस्कृति की स्वस्थ प्रगति में खतरे पैदा करते हैं।'' भारती ने अपने समकालीन साहित्य–सृजन के प्रति आत्मीय लगाव ही नहीं रखा, अपितु अनेक महत्वपूर्ण और मूलभूत साहित्यिक प्रश्नों पर गम्भीर चिन्तन व मनन भी किया है।

भारती की रचनाओं के पात्र ही उनकी देशप्रेम की भावना को जीवन्त बनाते थे, जिससे साहित्य में नयी जान आती थी तथा वह कहीं से बोझिल नहीं लगता है और न ही उसमें जबरदस्ती ढूँसा हुआ लगता है जैसे उनका उपन्यास ''गुनाहों का देवता'' में जो है तो रोमानी उपन्यास मगर डॉ. शुक्ला, कैलाश, चन्दर आदि पात्रों से उन्होंने देश–प्रेम का अभिनय करवाया है एक जगह पर डॉ. शुक्ल कहते हैं–''मुझे भी हिन्दुस्तान पर गर्व है।'' तो उन्होंने नायिकाओं को सिर्फ रूप वर्णन ही नहीं किया है बल्कि उन्हें भी राष्ट्रप्रेम में सहभागिता दिलवाई जहाँ सुधा कहती है–''हम मजाक नहीं करते? हम सचमुच समाजवादी दल में शामिल होंगे।'' सुधा बोली, ''अब हम सोंचते हैं कुछ काम करना चाहिए, बहुत खेल–कूद लिये, बचपना निभा लिया।''

भारती जी ने अपनी मानसिकता को भारतीय संस्कारों से जो उनमें कूट–कूट कर भरा है और अपनी रचनाओं में रामायण, महाभारत, गीता, भागवत, रामचरितमानस, कालिदास, रवीन्द्र नाथ टैगोर आदि का गहन अध्ययन किया है और उन्हीं से प्रभावित होकर उन्होंने अपना साहित्य लिखा है जो कनुप्रिया, अन्धायुग आदि में स्पष्ट झलक मिलती है। भारती भारतीय परम्परा के प्रति पूर्ण सजग व निष्ठावान है, लेकिन उन्होंने उतनी ही ईमानदारी से पाश्चात्य परम्परा का अध्ययन और मन्थन किया है। इसलिए भारती के साहित्य में कहीं–कहीं पर पाश्चात्य दर्शन की भी छाया आ जाती है, मगर अपने विवेकपूर्ण संयम और संतुलन के साथ।

भारती ने जब तक साहित्य लिखा तो उनकी लेखनी देशप्रेम से प्रभावित रही है। तभी तो कैलाश जोशी जी उनके बारे में कहते हैं कि–''भारती में चिर जागृत, चिर निर्माणशील कल्पना, देशकाल या युग सत्य के प्रति सतर्कता और साथ ही अपनी भारतीय परम्परा का ज्ञान एवं उसमें निहित शाश्वत सत्य एवं कल्याण को आयत करने का आग्रह है।'' कैलाश जी ने उनके बारे में यह कथन ठीक ही कहा है, क्योंकि उनके स्वाभाव में संस्कृति के प्रति, मनुष्य के प्रति तथा देश प्रेम आदि की स्पष्ट झाँकी मिलती है। जब वह देखते हैं कि प्रशासन कुछ नहीं कर रहा है, भ्रष्टाचार, गरीबी, बेरोजगारी के खिलाफ तो वह अपनी क्षोभ को पात्रों के माध्यम से प्रकट करके थोड़ा शान्ति का अनुभव करते हैं। ''ग्यारह सपनों का देश'' में शोभन के माध्यम में वह रोहित के बारे में कहते है कि–''रोहित को एक ऐसा इलाका दिया गया जहाँ राजनीतिक अपराध बहुत बढ़ गये थे। रोहित राय ने जितनी सख्ती से उस इलाके को काबू में किया, उसके विषय में विचित्र खबरें वह पढ़ता सुनता रहा। उसे समझ में ही नहीं आता था कि सूनी सड़कों पर चाँदनी में घूम–घूमकर गीत गाने वाला यह भावुक विद्रोही युवक यह सब कैसे कर सकता था–दमन, निरंकुश दमन।'' भारती का यह विद्रोह कालेज के दिनों में कुछ ज्यादा ही रहा जब वह पढ़ाई के साथ काव्य–पाठ गोष्ठियों में किया करते थे 'परिमल' आदि के माध्यम से इस बारे में 'धर्मयुग' परिवार के चन्द्रकान्त बन्दिवडेकर कहते हैं–''कॉलेज के दिनों में ही उन पर मार्क्सवाद का प्रभाव पड़ा। वे प्रगतिशील लेखक संघ के स्थानीय मन्त्री बने, लेकिन कम्युनिस्टों की कट्टरता तथा देशद्रोही नीतियों से उनका मोहभंग हुआ। इलाहाबाद में प्रगतिशील लेखक संघ की एक बैठक हुई। अध्यक्ष थे यशपाल जी भारती से कविता पढ़ने के लिए कहा गया–तो उन्होंने 'सुभाषचन्द्र बोस के प्रति' कविता पढ़ी। उस समय शिष्टता वश कोई कुछ नहीं बोला, परन्तु सबके चेहरे पर तनाव था।'' उस शिष्टतावश कोई बोला तो कुछ नहीं मगर उसके बाद से प्रगतिशील लेखक संघ से भारती का नाम हिन्दी खण्ड से अलग कर दिया गया और नया चुनाव कर लिया गया अन्य व्यक्ति था। लेकिन भारत का इस पर कोई असर नहीं पड़ा उन्हें जो करना था वह उन्होंने किया, और न ही उन्होंने इस बात पर नाराजगी व्यक्त की बल्कि एक साक्षात्कार में यह कहा कि मैं तो भगवान की कृपा मानता हूँ कि उस जिम्मेदारी से बाल–बाल बच गया।

भारती जी अपने मूल्यों पर चलने वाले इंसान थे जो उनका हृदय कहता था वह वही करते थे। वह इस बात की जरा भी परवाह नहीं करते थे कोई क्या सोचेगा तथा क्या कहेगा उनके बारे में वह अपने अर्न्तआत्मा की आवाज सुनते थे। उनकी साहित्य की प्रेरणा उनके जीवन के अनुभवों से जुड़ी थी। उन्होंने अपने अध्ययन में भारतीय सन्त साहित्य से लेकर धार्मिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक रचनाओं को शामिल किया तथा गहन अध्ययन किया तो पश्चिमी विचारक रिल्के, कामू, ज्यां पॉल सार्त्र, कार्ल मार्क्स आदि को भी डूबकर मनन किया, लेकिन साहित्य में वही उतारा जो उनका मन किया। जब तक ठण्डा लोहा, अन्धायुग को लोग अपने जेहन से उतार पाते तब कुछ उन्होंने 'कल्पना' में 'मुनादी' करवा दी जो आज हमें विनोबा भावे को श्रद्धान्जलि देने में इससे अच्छी शायद कोई रचना नहीं मिल सकती है। 'मुनादी' में वह लिखते हैं–

खलक खुदा का, मुलुक बश्शा का

हुकुम शहर कोतवाल का.....

हर खाओ–आम को आगाह किया जाता है

कि खबरदार रहें

और अपने–अपने किवाड़ों को अन्दर से

कुंडी चढ़ाकर बन्द कर लें

गिरा लें खिड़कियों के परदे

और बच्चों को बाहर सड़क पर न भेजें

क्योंकि

एक बहत्तर बरस का बूढा आदमी अपनी काँपती कमजोर आवाज में

सड़कों पर सच बोलता हुआ निकल पड़ा है।''

यह कविता जब 'कल्पना' में छपी तो इतनी प्रसिद्ध हुई कि यह राष्ट्रीय कविता बन गयी, जिसके सम्बंध में डॉ. बी.बी.जोशी जी लिखते हैं–''स्वातन्त्रयोत्तर काल की राष्ट्रीय चेतना सम्बंधी सर्वश्रेष्ठ कविताओं में से एक शीर्ष कविता धर्मवीर भारती की 'मुनादी' कल्पना के अगस्त 74 में प्रकाशित होती है और अर्न्तभारतीय स्तर पर कविता बनकर छा जाती है और इसके प्रकाशनोपरान्त एक वर्ष के भीतर ही 'आपातकाल' लागू होता है।'' यह एक बड़ी बात थी कि रचनाकार जिसकी गिनती राष्ट्रीय कवि न होने की थी और उसकी कविता अर्न्तभारतीय स्तर पर राष्ट्रीय कविता में नाम हो जाए।

जब सुभाष जी की मृत्यु हुई उस समय उन्होंने अपनी कविता के माध्यम से उन्होंने श्रद्धांजली अर्पित की इससे इस बात का भी पता चलता है कि उन्हें कितनी सदमा पहुँचा होगा–

''प्राण तुम्हारे धूमकेतु से चोर गगन पर झीना

जिस दम पहुँचे होंगे देवलोक की सीमाओं पर

उलट गयी होगी आसन से मौत मूर्छिता हो कर

और फट गया होगा ईश्वर के मरघट का सीना।''

भारती जी ने उन्हें देवलोक में भी सम्मानित किया है। भारती जब 'धर्मयुग' में सम्पादक बने तो वह साहित्य इससे पहले ही सारा लिख चुके क्योंकि फिर समयाभाव के कारण वह नहीं लिख पाये तो उन्होंने 'धर्मयुग' जो एक व्यावसायिक पत्र था में भी बदलाव किये व्यवसाय के साथ–साथ ऐतिहासिक राजनीतिक, सामाजिक आदि सभी कुछ उसमें बराबर डालते गये और इतनी कीर्ति फैलाई कि उस समय के सारे रिकार्ड ध्वस्त कर दिया। लेकिन देश–प्रेम की ज्वाला उनके मन में अब भी धधक रही थी तभी तो भारतीय विजय वाहिनी और बाग्लादेश की मुक्तिवाहिनी के सम्मिलित अभियान में भारती भी अपने सम्पादकीय और लेखकीय कार्य के लिए सम्मिलित हुए। बांग्लादेश की सघन हरीतिमा की सांवली सूरत और खूनी मुठभेड़ों, बम और गोलियों की वर्षा, घायलों और मुर्दों के बीच से युद्ध यात्रा करते हुए भारती जी के असैनिक और बिना अभ्यास के कदम रंचमात्र भी नहीं डगमगाए। भारती जी ने अपनी खुली आँखों से तथा भारी असुविधाओं का सामना करते हुए बांगला देश की जनता का राष्ट्रीय उत्साह और समर्पण भाव देखा। समस्त भारतीय साहित्यकारों में भारती ही ऐसे थे, जिन्होंने अपनी जान की बाजी लगाकर दरिद्र जनजीवन की दुर्दम स्वतन्त्र आकांक्षा और ऊर्जा का आँखों देखा हाल प्रस्तुत किया। इन सब कार्यों में उन्हें बहुत मजा आया तथा बहुत ही प्रसन्न थे वह कार्य करके। भारती ने यह सिद्ध कर दिया था, किन्तु उनका रचनाकार अभी दबा नहीं है। कटु आलोचनाओं के बाद भी भारती ने अपना जो स्थान साहित्य के क्षेत्र में बनाया है। वह हमेशा अविस्मरणीय रहेगा। उन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में तो झण्डे ही गाड़ दिये जो उनकी विवेक तथा उनके स्वतंत्रता की रक्षा करने में सफल रहा।

संदर्भ

- धर्मवीर भारती, मानव मूल्य और साहित्य, भारतीय ज्ञानपीठ 18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली, चौथा संस्करण 2006, पृ.सं.28।
- डॉ. पुष्पा वास्कर, धर्मवीर भारती व्यक्ति और साहित्यकार, अलका प्रकाशन, 128/106 बी ब्लाक किदवई नगर, कानपुर, प्रथम संस्करण, 1987, पृ.सं. 18
- धर्मवीर भारती, अंधा युग, किताब महल 22–ए, सरोजनी नायडू मार्ग इलाहाबाद, संस्करण 2001, पृ.31
- धर्मवीर भारती, धर्मवीर भारती की सम्पूर्ण कहानियाँ (साँस की कलम से), ग्रन्थमाला सम्पादक रवीन्द्र कलिया, भारतीय ज्ञानपीठ 18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली, चौथा संस्करण 2006, पृ.सं.116।
- डॉ. चन्द्रभानु सोनवणे, धर्मवीर भारती का साहित्य : सृजन के विविध रंग, पंचशील प्रकाशन फिल्म कालोनी, जयपुर, संस्करण 1984, पृ.सं.16।
- धर्मवीर भारती, सूरज का सातवाँ घोड़ा, ग्रन्थमाला सम्पादक : रवीन्द्र कालिया, भारतीय ज्ञानपीठ 18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली, चौथा संस्करण 2006, पृ.सं.12।
- धर्मवीर भारती, गुनाहों का देवता, ग्रन्थमाला सम्पादक : रवीन्द्र कालिया, भारतीय ज्ञानपीठ 18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली, चौथा संस्करण 2006, पृ.सं.45।
- कैलाश जोशी, धर्मवीर भारती उपन्यास साहित्य, चिन्मय प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर, संस्करण 1973–74, पृ.सं.14।

• धर्मवीर भारती, ग्यारह सपनों का देश, सम्पादक लक्ष्मीचन्द्र जैन, भारतीय ज्ञानपीठ 18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली, चौथा संस्करण 2006, पृ.सं.18।
• चन्द्रकान्त बान्दिवडेकर, धर्मवीर भारती : व्यक्तित्व और कृतित्व, साहित्य अकादमी नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2001, पृ.सं.15
• धर्मवीर भारती, मुनादी; कल्पना मासिक हैदराबाद, सम्पादक : बद्री विशाल पित्री अगस्त, 1964 अंक 267, वर्ष 25, पृ.सं. 263, 8–5।
• डॉ. बी.बी. जोशी, हिन्दी पत्रिकाओं में राष्ट्रीय काव्य चेतना, समृद्धि प्रकाशन 155 बाई का बाग, इलाहाबाद, संस्करण 1993–94, पृ.सं. 252
• धर्मवीर भारती, ठंडा लोहा : भारती की कविताएँ, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नेताजी सुभाष चन्द्र मार्ग दिल्ली–6, द्वितीय संस्करण 1970, पृ.सं.47।